**Swami Vivekananda Advanced Journal for Research and Studies**
Online Copy of Document Available on: www.svajrs.com

**ISSN:2584-105X** **Pg. 35-47**

# झांसी मण्डल का सांस्कृतिक योगदान: लोकगीतों और साहित्य में स्वतंत्रता चेतना

**प्रो० आनंद गोस्वामी**
बुंदेलखंड विश्वविद्यालय, झाँसी
**वसीम खाँन**
शोधार्थी, बुंदेलखंड विश्वविद्यालय, झाँसी

***Accepted: 03/09/2025***
***Published: 09/09/2025*** ***DOI: http://doi.org/10.5281/zenodo.17084731***

**सारांश**

झांसी मण्डल भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के इतिहास में अपनी विशिष्ट पहचान रखता है। यह क्षेत्र केवल 1857 की क्रांति और रानी लक्ष्मीबाई के अदम्य साहस के लिए ही नहीं, बल्कि अपनी समृद्ध सांस्कृतिक धरोहर के लिए भी प्रसिद्ध है। लोकगीतों और साहित्य ने यहां स्वतंत्रता चेतना को जन-जन तक पहुँचाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। ग्रामीण समाज में गाए जाने वाले लोकगीतों ने स्वतंत्रता की भावना को सरल भाषा और सहज अभिव्यक्ति के माध्यम से जनमानस तक पहुँचाया। वीर-गीतों और कृषक-गीतों ने जनता में प्रतिरोध और आत्मबल का संचार किया। इसी प्रकार साहित्यकारों ने कविता, नाटक, नौटंकी और लोकनाट्य के जरिए राष्ट्रप्रेम, बलिदान और संघर्ष की भावनाओं को अभिव्यक्त किया।

यह शोध झांसी मण्डल के सांस्कृतिक योगदान का समग्र अध्ययन प्रस्तुत करता है। इसमें लोकगीतों और साहित्य की अभिव्यक्ति का तुलनात्मक विश्लेषण किया गया है, जिससे स्पष्ट होता है कि लोक परंपरा ने ग्रामीण व अशिक्षित समाज को प्रेरित किया, जबकि साहित्य ने शिक्षित वर्ग में राष्ट्रीय चेतना को प्रबल बनाया। शोध में यह भी रेखांकित किया गया है कि स्वतंत्रता आंदोलन के दौरान उत्पन्न सांस्कृतिक अभिव्यक्तियाँ आज भी स्मृति-आयोजनों, मेलों और राष्ट्रीय पर्वों में जीवित हैं।

इस प्रकार झांसी मण्डल का योगदान केवल ऐतिहासिक संघर्ष तक सीमित नहीं रहा, बल्कि सांस्कृतिक धरोहर के रूप में आज भी स्वतंत्रता चेतना का प्रेरक स्रोत है। यह शोध भविष्य में लोकसाहित्य और सांस्कृतिक परंपराओं के संरक्षण की आवश्यकता को भी इंगित करता है।

***मुख्य शब्द*** *- झांसी मण्डल, सांस्कृतिक योगदान, लोकगीत, साहित्य, स्वतंत्रता चेतना, रानी लक्ष्मीबाई, 1857 की क्रांति, लोकसाहित्य, जनचेतना*

**प्रस्तावना**

## 1.1 विषय की पृष्ठभूमि एवं महत्व

भारत का स्वतंत्रता संग्राम केवल राजनीतिक और सैन्य संघर्ष की कहानी नहीं है, बल्कि यह एक गहन सांस्कृतिक जागरण का भी प्रतीक है। विदेशी शासन के लंबे दौर में जब सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक दमन का वातावरण व्याप्त था, तब जनमानस को एकजुट करने, आत्मबल जगाने और स्वतंत्रता के प्रति चेतना फैलाने का कार्य लोककला, लोकगीतों और साहित्य ने बड़ी मजबूती से किया। झांसी मण्डल इस दृष्टि से विशेष रूप से महत्वपूर्ण है, क्योंकि यह क्षेत्र 1857 की प्रथम स्वतंत्रता संग्राम का केंद्रबिंदु रहा और यहाँ की धरती ने रानी लक्ष्मीबाई जैसी वीरांगना को जन्म दिया।

झांसी मण्डल केवल ऐतिहासिक दृष्टि से ही नहीं, बल्कि सांस्कृतिक दृष्टि से भी अत्यंत समृद्ध रहा है। यहाँ की लोक परंपराएँ, गीत, नृत्य और साहित्यिक रचनाएँ जनमानस की भावनाओं और आकांक्षाओं को प्रतिबिंबित करती हैं। लोकगीतों ने ग्रामीण समाज में स्वतंत्रता की भावना को जीवित रखा। यह गीत केवल मनोरंजन का माध्यम नहीं थे, बल्कि प्रतिरोध, स्वाभिमान और राष्ट्रीय चेतना को अभिव्यक्त करने वाले शक्तिशाली साधन भी बने। वीर-रस से ओतप्रोत गीतों में रानी लक्ष्मीबाई और अन्य शहीदों की गाथाएँ सुनाई जाती थीं, जो लोगों को प्रेरित करती थीं कि वे विदेशी शासन के खिलाफ संघर्ष करें।

लोकगीतों की सबसे बड़ी विशेषता यह रही कि वे साक्षरता की सीमा से परे जाकर हर वर्ग तक पहुँचे। ग्रामीण महिलाओं ने अपने घरों के आँगन में, खेत-खलिहानों में और सामाजिक अवसरों पर इन गीतों को गाकर स्वतंत्रता की भावना को पीढ़ी-दर-पीढ़ी जीवित रखा। इस मौखिक परंपरा ने एक ओर जहाँ ऐतिहासिक घटनाओं को स्मृति में सुरक्षित रखा, वहीं दूसरी ओर उन्होंने सामाजिक एकता और राष्ट्रीय चेतना को बल दिया।

साहित्यिक दृष्टि से भी झांसी मण्डल ने महत्वपूर्ण योगदान दिया। यहाँ के कवियों, लोक कवियों और नाटककारों ने अपनी रचनाओं में स्वतंत्रता संग्राम और राष्ट्रीय चेतना को व्यक्त किया। कविता और नाटक उस समय स्वतंत्रता आंदोलन के उपकरण बने। हिंदी साहित्य में रानी लक्ष्मीबाई को लेकर असंख्य रचनाएँ लिखी गईं, जिनमें उनका साहस, त्याग और बलिदान का चित्रण हुआ। इन रचनाओं ने जनता के मन में एक आदर्श का निर्माण किया और यह संदेश दिया कि स्वतंत्रता प्राप्ति के लिए संघर्ष करना ही जीवन का परम धर्म है।

1857 की क्रांति झांसी के बिना अधूरी है। रानी लक्ष्मीबाई का संघर्ष केवल तलवार और रणभूमि तक सीमित नहीं था, बल्कि उनकी गाथा ने सांस्कृतिक अभिव्यक्तियों में भी जगह बनाई। गीतों, कविताओं और लोककथाओं में उनकी छवि अमर हो गई। **"खूब लड़ी मर्दानी, वह तो झांसी वाली रानी थी"** जैसे गीत और कविताएँ न केवल लोकमानस में आज तक जीवित हैं, बल्कि वे स्वतंत्रता आंदोलन के सांस्कृतिक पक्ष की सशक्त धरोहर हैं।

इस शोध विषय का महत्व इसलिए और बढ़ जाता है क्योंकि झांसी मण्डल की सांस्कृतिक भूमिका पर अपेक्षाकृत कम अकादमिक अध्ययन हुए हैं। अधिकांश अध्ययन केवल 1857 की ऐतिहासिक घटनाओं तक सीमित रहते हैं, जबकि यहाँ की लोकसांस्कृतिक धरोहर, लोकगीतों और साहित्य में स्वतंत्रता चेतना की अभिव्यक्ति पर गहराई से विश्लेषण कम हुआ है। इस शोध के माध्यम से यह स्पष्ट किया जाएगा कि कैसे सांस्कृतिक परंपराएँ केवल मनोरंजन या धार्मिक अनुष्ठानों तक सीमित न रहकर राष्ट्रीय चेतना और स्वतंत्रता आंदोलन की वाहक बन गईं।

सांस्कृतिक दृष्टि से झांसी मण्डल उत्तर भारत की उस परंपरा का प्रतिनिधित्व करता है, जहाँ लोक और साहित्य का संगम हुआ। लोकगीतों ने जहाँ जनमानस में प्रेरणा जगाई, वहीं साहित्य ने शिक्षित वर्ग को एक वैचारिक दिशा दी। इस प्रकार दोनों धाराओं ने मिलकर स्वतंत्रता चेतना का सशक्त स्वरूप निर्मित किया।

इस विषय का एक और महत्व यह भी है कि लोकसाहित्य और मौखिक परंपरा इतिहास के लिखित स्रोतों से कहीं अधिक जीवंत और प्रामाणिक होती है। यह सीधे जनता के अनुभवों, उनकी पीड़ा और उनके संघर्ष को प्रतिबिंबित करती है। स्वतंत्रता आंदोलन केवल बड़े नेताओं और राजनीतिक रणनीतियों की कहानी नहीं था, बल्कि यह सामान्य जनता के जीवन में गहराई से व्याप्त था। झांसी मण्डल के लोकगीत और साहित्य इस बात का प्रमाण हैं कि स्वतंत्रता का विचार गाँव-गाँव और घर-घर में जीवित था।

आज के संदर्भ में भी इस विषय का महत्व अत्यधिक है। जब हम स्वतंत्रता संग्राम की स्मृतियों को सहेजते हैं, तो केवल राजनीतिक घटनाओं को याद करना पर्याप्त नहीं है। हमें उस सांस्कृतिक चेतना को भी समझना होगा जिसने जनमानस को संगठित किया। झांसी मण्डल का सांस्कृतिक योगदान हमें यह सिखाता है कि कैसे कला, साहित्य और लोकजीवन सामाजिक परिवर्तन और राष्ट्रीय आंदोलन का आधार बन सकते हैं। यह शोध वर्तमान पीढ़ी को अपनी सांस्कृतिक जड़ों से जोड़ने का कार्य करेगा और यह भी बताएगा कि सांस्कृतिक धरोहर का संरक्षण क्यों आवश्यक है।

इस शोध विषय की प्रासंगिकता यह है कि यह केवल अतीत का अध्ययन नहीं है, बल्कि यह वर्तमान और भविष्य के लिए भी मार्गदर्शक है। यदि हम झांसी मण्डल की सांस्कृतिक परंपराओं का अध्ययन करें, तो हमें समझ आता है कि कैसे समाज में स्वतंत्रता की भावना लोकगीतों और साहित्य के माध्यम से फैली और कैसे इसने भारतीय स्वतंत्रता संग्राम को एक व्यापक जनांदोलन का रूप दिया।

## 1.2. शोध के उद्देश्य

किसी भी शोध कार्य का मूल्यांकन इस आधार पर किया जाता है कि उसके उद्देश्य कितने स्पष्ट और सुसंगत हैं। उद्देश्य शोध को दिशा प्रदान करते हैं और यह निर्धारित

करते हैं कि अध्ययन किस प्रकार से विषयवस्तु को प्रस्तुत करेगा। "झांसी मण्डल का सांस्कृतिक योगदान: लोकगीतों और साहित्य में स्वतंत्रता चेतना" विषय पर यह शोध मुख्यतः निम्नलिखित उद्देश्यों को ध्यान में रखकर किया जा रहा है:

**1. झांसी मण्डल की ऐतिहासिक एवं सांस्कृतिक पृष्ठभूमि का अध्ययन**

शोध का पहला उद्देश्य झांसी मण्डल की ऐतिहासिक और सांस्कृतिक पृष्ठभूमि को समझना है। विशेष रूप से 1857 की क्रांति और उसके बाद के स्वतंत्रता आंदोलनों में इस क्षेत्र की भूमिका का अध्ययन करना तथा यह जानना कि किस प्रकार सांस्कृतिक परंपराएँ यहाँ के जनमानस में स्वतंत्रता की चेतना जाग्रत करने में सहायक रहीं।

**2. लोकगीतों में स्वतंत्रता चेतना की अभिव्यक्ति का विश्लेषण**

लोकगीत झांसी मण्डल की सांस्कृतिक पहचान का अभिन्न हिस्सा हैं। शोध का दूसरा उद्देश्य यह स्पष्ट करना है कि स्वतंत्रता संग्राम के दौरान लोकगीतों में किस प्रकार प्रतिरोध, वीरता और त्याग की ध्वनि प्रकट हुई। इन गीतों का ग्रामीण समाज, विशेषकर महिलाओं और किसानों पर क्या प्रभाव पड़ा और उन्होंने स्वतंत्रता आंदोलन को किस प्रकार प्रेरित किया, इसका विश्लेषण इस शोध का एक महत्वपूर्ण उद्देश्य है।

**3. साहित्यिक कृतियों में स्वतंत्रता चेतना का अध्ययन**

साहित्य समाज का दर्पण होता है। झांसी मण्डल के कवियों, लोककवियों और साहित्यकारों की रचनाओं में स्वतंत्रता, बलिदान और राष्ट्रप्रेम का किस प्रकार चित्रण हुआ, यह शोध का तीसरा उद्देश्य है। इसमें कविता, नाटक, नौटंकी और लोकनाट्य जैसी विधाओं में स्वतंत्रता चेतना की अभिव्यक्ति का अध्ययन किया जाएगा।

**4. लोकगीत और साहित्य का तुलनात्मक अध्ययन**

शोध का चौथा उद्देश्य यह देखना है कि स्वतंत्रता चेतना के प्रसार में लोकगीत और साहित्य ने किस प्रकार अलग-अलग वर्गों को प्रभावित किया। लोकगीत जहाँ अशिक्षित और ग्रामीण समाज में पहुँचे, वहीं साहित्य ने शिक्षित वर्ग को वैचारिक दिशा दी। इस तुलनात्मक अध्ययन से यह समझने में सहायता मिलेगी कि दोनों माध्यमों ने मिलकर स्वतंत्रता आंदोलन को व्यापक जनआंदोलन का रूप देने में कैसी भूमिका निभाई।

**5. सांस्कृतिक धरोहर का संरक्षण और प्रासंगिकता**

शोध का पाँचवाँ उद्देश्य वर्तमान परिप्रेक्ष्य में झांसी मण्डल की सांस्कृतिक धरोहर को संरक्षित करने की आवश्यकता को रेखांकित करना है। आज जब लोकगीत और लोकनाट्य जैसी परंपराएँ धीरे-धीरे लुप्त हो रही हैं, तब उनके ऐतिहासिक महत्व और स्वतंत्रता चेतना में योगदान को समझना भविष्य की पीढ़ियों के लिए आवश्यक है।

**1.3 शोध-प्रश्न**

किसी भी शोध कार्य को सुव्यवस्थित करने के लिए शोध प्रश्नों का निर्धारण अत्यंत आवश्यक होता है। ये प्रश्न शोध को एक निश्चित दिशा देते हैं और यह स्पष्ट करते हैं कि शोधकर्ता अपने अध्ययन से किन बिंदुओं को स्पष्ट करना चाहता है। "झांसी मण्डल का सांस्कृतिक योगदान: लोकगीतों और साहित्य में स्वतंत्रता चेतना" विषय पर शोध करते समय निम्नलिखित शोध प्रश्नों को प्रमुख रूप से सामने रखा गया है:

**-प्रमुख शोध प्रश्न**

**1. झांसी मण्डल का ऐतिहासिक और सांस्कृतिक स्वरूप स्वतंत्रता संग्राम की पृष्ठभूमि में किस प्रकार से विकसित हुआ?**
यह प्रश्न यह स्पष्ट करने के लिए है कि स्वतंत्रता आंदोलन से पहले झांसी मण्डल की सांस्कृतिक परंपराएँ कैसी थीं और उन्होंने आंदोलन के लिए किस प्रकार की भूमि तैयार की।

**2. झांसी मण्डल के लोकगीतों में स्वतंत्रता चेतना की अभिव्यक्ति किस रूप में हुई?**
इस प्रश्न के माध्यम से यह जाना जाएगा कि लोकगीतों में प्रतिरोध, स्वाभिमान, बलिदान और प्रेरणा जैसे तत्व किस प्रकार प्रकट हुए और उनका ग्रामीण समाज पर क्या प्रभाव पड़ा।

**3. स्वतंत्रता संग्राम के दौरान झांसी मण्डल के साहित्यकारों और उनकी रचनाओं ने राष्ट्रवादी भावना को किस प्रकार व्यक्त किया?**
यह प्रश्न यह समझने के लिए है कि साहित्यकारों ने कविता, नाटक, नौटंकी और अन्य साहित्यिक विधाओं के माध्यम से स्वतंत्रता चेतना को किस प्रकार जनमानस तक पहुँचाया।

**4. लोकगीत और साहित्य स्वतंत्रता आंदोलन में किन-किन वर्गों तक पहुँचे और उन्होंने किन-किन रूपों में समाज को प्रभावित किया?**
इस प्रश्न का उद्देश्य यह देखना है कि लोकगीतों ने ग्रामीण और अशिक्षित समाज पर तथा साहित्य ने शिक्षित और शहरी समाज पर किस प्रकार असर डाला।

**5. झांसी मण्डल के लोकगीतों और साहित्य का तुलनात्मक अध्ययन स्वतंत्रता चेतना की व्यापकता को किस प्रकार रेखांकित करता है?**
इस प्रश्न के माध्यम से यह स्पष्ट किया जाएगा कि लोकगीत और साहित्य, दोनों धाराएँ मिलकर स्वतंत्रता आंदोलन को व्यापक जनआंदोलन में बदलने में किस प्रकार सहायक बनीं।

आज भी झांसी मण्डल की सांस्कृतिक परंपराएँ किस प्रकार स्मृति-आयोजनों, राष्ट्रीय पर्वों और जनचेतना में जीवित हैं।

**1.4 अध्ययन की सीमा**

हर शोध की एक निश्चित परिधि होती है, जिसके अंतर्गत ही उसका विश्लेषण और निष्कर्ष निर्धारित किए जाते हैं। "झांसी मण्डल का सांस्कृतिक योगदान: लोकगीतों और साहित्य में

स्वतंत्रता चेतना" विषय पर प्रस्तुत यह शोध भी अपनी कुछ निश्चित सीमाओं में किया जाएगा।

सबसे पहले, यह अध्ययन विशेष रूप से झांसी मण्डल तक सीमित है। इस मण्डल में सम्मिलित क्षेत्रों (झांसी, ललितपुर और जालौन) की सांस्कृतिक धरोहर, लोकगीतों और साहित्य को ही मुख्य अध्ययन का आधार बनाया जाएगा। अन्य क्षेत्रों के सांस्कृतिक योगदान का उल्लेख केवल तुलनात्मक संदर्भ या पृष्ठभूमि स्पष्ट करने के लिए किया जाएगा।

दूसरे, यह शोध मुख्य रूप से लोकगीतों और साहित्यिक कृतियों पर केंद्रित है। स्वतंत्रता आंदोलन से जुड़े अन्य सांस्कृतिक माध्यम जैसे चित्रकला, शिल्पकला या स्थापत्य-कला को इसमें विस्तृत रूप से सम्मिलित नहीं किया जाएगा। अध्ययन का उद्देश्य लोक और साहित्य की उन अभिव्यक्तियों का विश्लेषण करना है जिन्होंने स्वतंत्रता चेतना को जनमानस तक पहुँचाया।

तीसरे, इस शोध में स्वतंत्रता आंदोलन के सभी चरणों का उल्लेख होगा, किंतु विशेष जोर 1857 की क्रांति और उसके पश्चात राष्ट्रीय आंदोलन के दौर पर रहेगा। क्योंकि इसी समय झांसी मण्डल की सांस्कृतिक अभिव्यक्तियाँ सर्वाधिक सशक्त रूप में सामने आईं।

चौथे, शोध में लोकगीतों और साहित्य का तुलनात्मक अध्ययन भी किया जाएगा, किंतु यह तुलनात्मक राष्ट्रीय स्तर पर नहीं, बल्कि झांसी मण्डल की परिधि में ही सीमित रहेगी।

अंततः, यह शोध सांस्कृतिक योगदान के ऐतिहासिक और अकादमिक पक्ष पर केंद्रित है। इसका उद्देश्य राजनीतिक या सैन्य विश्लेषण करना नहीं है, बल्कि यह स्पष्ट करना है कि लोकगीतों और साहित्य ने स्वतंत्रता चेतना के प्रसार में कैसी भूमिका निभाई।

## 2. साहित्य समीक्षा

### 2.1 स्वतंत्रता आंदोलन और सांस्कृतिक योगदान पर पूर्ववर्ती अध्ययनों की समीक्षा

भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन पर असंख्य अध्ययन हुए हैं, परंतु अधिकांशतः ये राजनीतिक घटनाओं, नेताओं और आंदोलनों तक ही सीमित रहे। सांस्कृतिक योगदान को अपेक्षाकृत कम महत्व मिला। हालांकि कुछ विद्वानों ने यह माना कि स्वतंत्रता आंदोलन केवल राजनीतिक संघर्ष नहीं, बल्कि सांस्कृतिक पुनर्जागरण भी था। राधाकमल मुखर्जी (1952) और जवाहरलाल नेहरू (1946, *Discovery of India*) ने इस तथ्य पर बल दिया कि भारतीय संस्कृति ने स्वतंत्रता आंदोलन को दिशा दी। सुशील कुमार दीक्षित (1987) ने यह दर्शाया कि लोककला और लोकगीतों ने ग्रामीण समाज में स्वतंत्रता चेतना फैलाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

डॉ. रामविलास शर्मा और हजारीप्रसाद द्विवेदी जैसे साहित्यकारों ने भी अपने निबंधों में यह स्वीकार किया कि साहित्य और संस्कृति ने स्वतंत्रता आंदोलन के लिए आधारभूमि तैयार की। हाल के वर्षों में सुधीर चंद्र (*Freedom and Its Challenges*, 2011) और विपिन चंद्रा (*India's Struggle for Independence*, 1989) ने यह तर्क रखा कि स्वतंत्रता संग्राम का सांस्कृतिक पक्ष अभी भी पर्याप्त रूप से खोजा नहीं गया है।

इस प्रकार स्पष्ट है कि स्वतंत्रता आंदोलन में सांस्कृतिक योगदान को मान्यता तो दी गई है, लेकिन इसका व्यवस्थित और क्षेत्रीय स्तर पर अध्ययन अपेक्षाकृत कम हुआ है।

### 2.2 लोकगीतों पर किए गए प्रमुख शोध

लोकगीतों पर भारतीय लोकसाहित्य शोध में व्यापक अध्ययन हुआ है। रामनारायण उपाध्याय (1974) ने उत्तर भारत के लोकगीतों में स्वतंत्रता चेतना को रेखांकित किया। वे बताते हैं कि ग्रामीण समाज में गाए गए गीतों ने प्रतिरोध और स्वाभिमान को स्वर दिया। नागेन्द्र (1981) ने अपने शोध में यह दिखाया कि लोकगीत केवल सांस्कृतिक धरोहर नहीं, बल्कि ऐतिहासिक दस्तावेज भी हैं, जिनमें जनता की भावनाएँ सुरक्षित रहती हैं।

उत्तर प्रदेश के संदर्भ में, श्यामसुंदर दास और महावीर प्रसाद द्विवेदी ने हिंदी लोकसाहित्य के संग्रह और अध्ययन में विशेष योगदान दिया। हाल ही में प्रतिभा मिश्र (*लोकगीत और स्वतंत्रता चेतना*, 2005) ने यह दर्शाया कि 1857 की क्रांति से जुड़े अनेक गीत आज भी गाँवों में जीवित हैं। हालाँकि, लोकगीतों पर हुए अधिकांश शोध सामान्य स्तर पर हैं। झांसी मण्डल के लोकगीतों को स्वतंत्रता चेतना से विशेष रूप से जोड़कर कम ही अध्ययनों में देखा गया है। यही इस शोध का विशिष्ट पक्ष है।

### 2.3 हिंदी साहित्य में स्वतंत्रता चेतना संबंधी विद्यमान अध्ययन

हिंदी साहित्य में स्वतंत्रता चेतना पर गहन कार्य हुआ है। रामविलास शर्मा (*हिंदी साहित्य और स्वतंत्रता संग्राम*, 1969) ने साहित्य में राष्ट्रवादी चेतना का व्यवस्थित अध्ययन किया। नामवर सिंह ने भी अपनी आलोचनाओं में स्वतंत्रता संग्राम की साहित्यिक धारा का विश्लेषण किया। प्रेमचंद की रचनाएँ (जैसे *सद्गति*, *ठाकुर का कुआँ*, *रंगभूमि*) सामाजिक अन्याय और प्रतिरोध की भावना को स्पष्ट करती हैं।

1857 की क्रांति के साहित्यिक चित्रण पर अमृतलाल नागर की कृति *गदर के फूल* (1960) उल्लेखनीय है। इसमें झांसी और रानी लक्ष्मीबाई की गाथाएँ साहित्यिक रूप में दर्ज हैं। इसके अतिरिक्त सुभद्राकुमारी चौहान की कविता "झांसी की रानी" आज भी स्वतंत्रता चेतना की प्रेरणा का स्रोत है।

हालांकि हिंदी साहित्य पर पर्याप्त कार्य हुआ है, किंतु झांसी मण्डल विशेष पर केंद्रित साहित्यिक विश्लेषण अभी भी सीमित है। इसलिए यह शोध इस कमी को पूरा करेगा।

### 2.4 झांसी मण्डल पर उपलब्ध ऐतिहासिक, सांस्कृतिक व साहित्यिक शोध

झांसी मण्डल पर अधिकांश अध्ययन ऐतिहासिक दृष्टि से हुए हैं। वीरेंद्र नारायण (*Rani Lakshmibai of Jhansi*, 1957) और पुष्पा जोशी (2003) ने 1857 की क्रांति में झांसी की

भूमिका का विश्लेषण किया। सांस्कृतिक पक्ष पर कुछ आंशिक कार्य हुआ है, जैसे हरिश्चंद्र वर्मा (*झांसी की लोकपरंपराएँ,* 1999) जिन्होंने इस क्षेत्र के गीतों और लोककथाओं को संकलित किया।

साहित्यिक योगदान के संदर्भ में कुछ शोध-प्रबंध उपलब्ध हैं, किंतु वे मुख्यतः हिंदी साहित्य के सामान्य परिदृश्य पर केंद्रित हैं, झांसी क्षेत्र पर नहीं। हाल के वर्षों में बुंदेलखंड विश्वविद्यालय, झांसी और लखनऊ विश्वविद्यालय में कुछ शोध हुए हैं, जिन्होंने झांसी की सांस्कृतिक धरोहर और साहित्यिक परंपराओं को आंशिक रूप से जोड़ा है।

स्पष्ट है कि झांसी मण्डल के लोकगीतों और साहित्य में स्वतंत्रता चेतना पर केंद्रित शोध अभी भी सीमित और विखंडित हैं।

### 2.5 शोध अंतराल

साहित्य समीक्षा से यह स्पष्ट होता है कि:

1. स्वतंत्रता आंदोलन पर बहुत शोध हुआ है, लेकिन सांस्कृतिक योगदान पर अपेक्षाकृत कम।
2. लोकगीतों पर अनेक शोध हैं, किंतु झांसी मण्डल के स्वतंत्रता-संबंधी लोकगीतों का व्यवस्थित अध्ययन नहीं हुआ।
3. हिंदी साहित्य में स्वतंत्रता चेतना पर पर्याप्त कार्य है, किंतु झांसी मण्डल की विशिष्ट भूमिका कम रेखांकित हुई।
4. झांसी मण्डल पर उपलब्ध अध्ययन ऐतिहासिक दृष्टि से समृद्ध हैं, परंतु सांस्कृतिक और साहित्यिक योगदान को समग्र रूप से नहीं देखा गया।
5. तुलनात्मक अध्ययन (लोकगीत बनाम साहित्य) इस क्षेत्र में लगभग अनुपस्थित है।

अतः यह शोध इन सभी अंतरालों को भरते हुए झांसी मण्डल के सांस्कृतिक योगदान को एक समग्र और अकादमिक रूप से स्थापित करने का प्रयास करेगा।

## 3. शोध कार्यप्रणाली:

प्रस्तुत शोध "झांसी मण्डल का सांस्कृतिक योगदान: लोकगीतों और साहित्य में स्वतंत्रता चेतना" गुणात्मक स्वरूप का है। इसका स्वरूप मुख्यतः वर्णनात्मक और विश्लेषणात्मक है, क्योंकि इसमें स्वतंत्रता चेतना को सांस्कृतिक एवं साहित्यिक परिप्रेक्ष्य से समझने और उसकी गहन व्याख्या करने का प्रयास किया गया है।

इस शोध के लिए जानकारी मुख्यतः दो स्रोतों से प्राप्त की जाएगी – प्राथमिक और द्वितीयक। प्राथमिक स्रोतों में झांसी मण्डल के विभिन्न अंचलों में प्रचलित लोकगीतों और लोककथाओं का संकलन, मौखिक परंपरा (Oral Tradition) के अंतर्गत बुजुर्गों और लोकगायकों के साक्षात्कार, स्वतंत्रता आंदोलनकालीन पांडुलिपियाँ, पत्रिकाएँ तथा साहित्यकारों की मौलिक रचनाएँ सम्मिलित हैं। द्वितीयक स्रोतों में प्रकाशित पुस्तकें, शोध-प्रबंध, पत्र-पत्रिकाएँ, ऐतिहासिक अभिलेख और इंटरनेट पर उपलब्ध डिजिटल आर्काइव्स शामिल किए जाएंगे।

सामग्री विश्लेषण इस शोध की प्रमुख तकनीक होगी। इसके अंतर्गत लोकगीतों और साहित्यिक कृतियों की विषयवस्तु का गहन अध्ययन कर यह समझने का प्रयास किया जाएगा कि उनमें स्वतंत्रता चेतना किस प्रकार अभिव्यक्त हुई है। तुलनात्मक अध्ययन के माध्यम से लोकगीतों और साहित्य की भूमिका का विश्लेषण कर यह स्पष्ट किया जाएगा कि दोनों माध्यमों ने किन-किन वर्गों को प्रभावित किया। इसके अतिरिक्त ऐतिहासिक पद्धति का प्रयोग करते हुए घटनाओं और सांस्कृतिक अभिव्यक्तियों को ऐतिहासिक संदर्भ में देखा जाएगा, तथा मौखिक इतिहास के अंतर्गत लोकगायकों और परंपरागत परिवारों से बातचीत कर मौखिक साक्ष्य भी संकलित किए जाएंगे।

यह शोध विशेष रूप से झांसी मण्डल के तीन जिलों—झांसी, जालौन और ललितपुर—तक सीमित है। अध्ययन का केंद्रबिंदु स्वतंत्रता संग्राम विशेषकर 1857 की क्रांति और उसके पश्चात का काल होगा, क्योंकि इसी समय झांसी मण्डल की सांस्कृतिक अभिव्यक्तियाँ सर्वाधिक प्रभावशाली रूप में सामने आईं।

हालाँकि, इस अध्ययन की कुछ सीमाएँ भी हैं। इसका दायरा केवल सांस्कृतिक और साहित्यिक पक्ष तक ही सीमित है, राजनीतिक और सैन्य पहलुओं का विस्तृत विश्लेषण इसमें सम्मिलित नहीं होगा। इसके अतिरिक्त लोकगीतों और मौखिक परंपरा का संकलन क्षेत्रीय उपलब्धता और समय की सीमा पर निर्भर करेगा।

संक्षेप में कहा जा सकता है कि यह अनुसंधान पद्धति झांसी मण्डल के लोकगीतों और साहित्य का व्यवस्थित, तुलनात्मक और ऐतिहासिक अध्ययन प्रस्तुत करेगी। इसके माध्यम से यह स्पष्ट करना संभव होगा कि स्वतंत्रता चेतना किस प्रकार लोक और साहित्य के माध्यम से जनमानस तक पहुँची और आज भी सांस्कृतिक धरोहर के रूप में जीवित है।

## 4 – झांसी मण्डल का ऐतिहासिक एवं सांस्कृतिक परिचय

### 4.1 झांसी मण्डल का भौगोलिक व सामाजिक स्वरूप

झांसी मण्डल उत्तर प्रदेश के दक्षिणी भाग में स्थित है, जो भूगोल और संस्कृति की दृष्टि से अत्यंत महत्त्वपूर्ण क्षेत्र है। इस मण्डल में मुख्यतः तीन जिले सम्मिलित हैं – झांसी, जालौन और ललितपुर। यह क्षेत्र बुंदेलखंड का अभिन्न अंग है और यमुना नदी के दक्षिणी भाग में स्थित है। यहाँ की भौगोलिक बनावट पथरीली भूमि, पहाड़ी क्षेत्र और उपजाऊ मैदानी भागों का मिश्रण है। नदियों, विशेषकर बेतवा, धसान, पहूज और केन ने इस क्षेत्र की कृषि और लोकजीवन को आकार दिया है। सामाजिक दृष्टि से झांसी मण्डल विविध परंपराओं का संगम है। यहाँ की जनसंख्या में किसान, मजदूर, व्यापारी, शिल्पकार और सेवा-निष्ठ वर्ग सम्मिलित

हैं। समाज में जातिगत विविधता अवश्य रही है, परंतु स्वतंत्रता आंदोलन के दौर में राष्ट्रीय भावना ने इस विविधता को एकजुट करने का कार्य किया। ग्रामीण समाज यहाँ की संस्कृति का मूल आधार है, जहाँ लोकगीत, लोकनृत्य और लोककथाएँ सामाजिक जीवन के केंद्र में हैं।

यहाँ का सामाजिक जीवन परंपराओं और रीति-रिवाजों से गहराई से जुड़ा हुआ है। विवाह, पर्व-त्योहार और कृषि-कार्य सभी लोकगीतों और सामूहिक उत्सवों के माध्यम से संपन्न होते रहे हैं। सामाजिक संरचना में महिलाओं की भूमिका विशेष रही है। उन्होंने न केवल पारिवारिक और धार्मिक परंपराओं को जीवित रखा, बल्कि स्वतंत्रता आंदोलन के समय लोकगीतों और सांस्कृतिक आयोजनों के माध्यम से राष्ट्रीय चेतना का भी संचार किया।

भौगोलिक स्थिति ने इस क्षेत्र की राजनीतिक और सांस्कृतिक भूमिका को भी प्रभावित किया। बुंदेलखंड का यह हिस्सा मध्य भारत से जुड़ाव के कारण सदैव सामरिक दृष्टि से महत्त्वपूर्ण रहा। यही कारण है कि 1857 की क्रांति के समय झांसी का किला और उसका परिवेश अंग्रेजों और क्रांतिकारियों दोनों के लिए रणनीतिक केंद्र बना।

संक्षेप में, झांसी मण्डल का भौगोलिक स्वरूप पथरीली भूमि, नदियों और उपजाऊ मैदानी क्षेत्रों का मिश्रण है, जबकि सामाजिक स्वरूप लोक परंपराओं, सामूहिक जीवन और सांस्कृतिक एकता का परिचायक है। यही पृष्ठभूमि आगे चलकर स्वतंत्रता आंदोलन और सांस्कृतिक चेतना के लिए आधार बनी।

### 4.2 ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य: 1857 की क्रांति और रानी लक्ष्मीबाई

भारतीय स्वतंत्रता संग्राम का प्रथम व्यापक स्वरूप 1857 की क्रांति में सामने आया, जिसे अक्सर "भारत का प्रथम स्वतंत्रता संग्राम" कहा जाता है। इस क्रांति का केंद्र कई क्षेत्रों में फैला, किंतु झांसी मण्डल की भूमिका इसमें सबसे अधिक उल्लेखनीय रही। झांसी केवल एक भौगोलिक स्थल नहीं, बल्कि स्वतंत्रता चेतना का प्रतीक बन गया। इसका सबसे बड़ा कारण रानी लक्ष्मीबाई थीं, जिन्होंने अपने साहस, नेतृत्व और बलिदान से झांसी को अमर कर दिया।

1857 की क्रांति का तात्कालिक कारण अंग्रेजी ईस्ट इंडिया कंपनी की नीतियाँ, सैन्य असंतोष और सामाजिक-धार्मिक हस्तक्षेप थे। झांसी पर "डॉक्ट्रिन ऑफ लैप्स" नीति लागू की गई, जिसके तहत गोद लिए पुत्र को उत्तराधिकारी मानने से इंकार कर अंग्रेजों ने राज्य हड़पने का प्रयास किया। यह घटना रानी लक्ष्मीबाई और अंग्रेजों के बीच टकराव का मुख्य कारण बनी।

रानी लक्ष्मीबाई, जिनका जन्म 1828 में वाराणसी में हुआ था, विवाह के पश्चात झांसी की रानी बनीं। वे बाल्यकाल से ही शिक्षा, घुड़सवारी, तीरंदाजी और युद्धकला में दक्ष थीं। जब 1857 की क्रांति का विस्तार हुआ, तब झांसी भी इसका प्रमुख केंद्र बन गया। रानी ने न केवल सैन्य दृष्टि से बल्कि सांस्कृतिक और सामाजिक स्तर पर भी लोगों को संगठित किया।

झांसी किला इस क्रांति का गढ़ बना। रानी लक्ष्मीबाई ने अपनी सेना में पुरुषों के साथ-साथ महिलाओं को भी शामिल किया, जो उस समय असाधारण था। उन्होंने घुड़सवार सेना और तोपखाने का नेतृत्व स्वयं किया। अप्रैल 1858 में अंग्रेजों ने झांसी पर हमला किया, किंतु रानी और उनके साथियों ने अदम्य साहस से प्रतिरोध किया। यद्यपि अंततः अंग्रेजों ने झांसी पर अधिकार कर लिया, किंतु रानी ने ग्वालियर की ओर प्रस्थान कर क्रांति को जीवित रखा।

18 जून 1858 को ग्वालियर के पास कोटा-की-सराय में रानी लक्ष्मीबाई शहीद हुईं। उनकी वीरता और बलिदान ने न केवल झांसी मण्डल बल्कि पूरे भारत को स्वतंत्रता के लिए प्रेरित किया। प्रसिद्ध पंक्ति "खूब लड़ी मर्दानी, वह तो झांसी वाली रानी थी" उनके साहस और राष्ट्रीय चेतना का अमर प्रतीक बन गई।

1857 की क्रांति और रानी लक्ष्मीबाई का योगदान केवल युद्धभूमि तक सीमित नहीं रहा। यह लोकगीतों, लोककथाओं और साहित्य में भी जीवित रहा। ग्रामीण समाज में गाए जाने वाले वीर-गीतों ने उनकी गाथा को पीढ़ी-दर-पीढ़ी सुरक्षित रखा। साहित्य में कवियों और लेखकों ने रानी की छवि को स्वतंत्रता, साहस और स्वाभिमान के आदर्श रूप में प्रस्तुत किया।

संक्षेप में, 1857 की क्रांति और रानी लक्ष्मीबाई झांसी मण्डल के ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य का सबसे सशक्त अध्याय हैं। इसने न केवल राजनीतिक संघर्ष को दिशा दी, बल्कि सांस्कृतिक चेतना को भी गहराई से प्रभावित किया। यही कारण है कि झांसी और रानी लक्ष्मीबाई आज भी स्वतंत्रता चेतना के अमर प्रतीक बने हुए हैं।

### 4.3 स्वतंत्रता आंदोलन से पूर्व की सांस्कृतिक पृष्ठभूमि

झांसी मण्डल, जो बुंदेलखंड का प्रमुख हिस्सा है, स्वतंत्रता आंदोलन से पहले ही समृद्ध सांस्कृतिक परंपराओं का धनी रहा है। यहाँ की संस्कृति लोकपरंपराओं, धार्मिक अनुष्ठानों, लोकगीतों, लोकनाट्य और साहित्यिक रचनाओं में रची-बसी थी। यह सांस्कृतिक विरासत स्वतंत्रता आंदोलन के लिए आधारभूमि बनी और बाद में जनचेतना को संगठित करने में सहायक हुई।

प्राचीन काल से ही बुंदेलखंड वीरता और त्याग की भूमि माना जाता रहा है। यहाँ की सांस्कृतिक अभिव्यक्तियों में स्वाभिमान, संघर्ष और धार्मिक आस्था के स्वर प्रमुख थे। लोकगीतों में देवी-देवताओं की स्तुति के साथ-साथ वीर योद्धाओं और लोकनायकों की कथाएँ गाई जाती थीं। ग्रामीण स्त्रियाँ खेत-खलिहानों और आँगनों में श्रम करते हुए गीत गातीं, जो केवल मनोरंजन ही नहीं बल्कि सामाजिक एकता और सांस्कृतिक स्मृति को जीवित रखने का माध्यम भी थे।

स्वतंत्रता आंदोलन से पूर्व झांसी मण्डल की सांस्कृतिक धारा पर भक्ति आंदोलन का गहरा प्रभाव था। कबीर, तुलसीदास,

रहीम और मीरा जैसे संत कवियों की परंपरा ने इस क्षेत्र में भी अपनी छाप छोड़ी थी। धार्मिक भक्ति और सामाजिक समरसता का यह भाव आगे चलकर स्वतंत्रता की सामूहिक चेतना के लिए सहायक सिद्ध हुआ। विशेषकर बुंदेली लोकभाषा में रचे गए भक्ति गीतों और आल्हा-ऊदल जैसे वीर-गीतों ने जनता को साहस और स्वाभिमान की प्रेरणा दी।

लोकनाट्य की परंपरा भी इस क्षेत्र की सांस्कृतिक पृष्ठभूमि का अहम हिस्सा थी। नौटंकी, स्वांग और अखाड़ा जैसे मंचीय रूप जनमानस तक संदेश पहुँचाने के प्रभावी साधन थे। ये लोकनाट्य केवल धार्मिक कथाओं तक सीमित नहीं रहे, बल्कि सामाजिक और राजनीतिक परिस्थितियों का भी चित्रण करते थे। इस तरह लोकनाट्य ने जनता को जागरूक करने और सामूहिक भावना को मजबूत करने का कार्य किया।

साहित्यिक दृष्टि से, स्वतंत्रता आंदोलन से पूर्व झांसी मण्डल हिंदी साहित्य की मुख्यधारा से जुड़ा रहा। स्थानीय कवियों और लोककवियों ने ब्रज और बुंदेली भाषा में रचनाएँ कीं। इनमें वीरता, धर्मनिष्ठा और त्याग की भावना प्रमुख थी। ये रचनाएँ आगे चलकर स्वतंत्रता चेतना के लिए प्रेरक बनीं।

सामाजिक दृष्टि से देखा जाए तो यह क्षेत्र कृषक और श्रमिक जीवन पर आधारित था। यहाँ की जनता कठिन परिश्रम करने वाली और आत्मसम्मान को महत्व देने वाली थी। यही सामाजिक प्रवृत्ति स्वतंत्रता आंदोलन के दौरान प्रतिरोध और संघर्ष की चेतना में बदल गई।

संक्षेप में, झांसी मण्डल की स्वतंत्रता आंदोलन से पूर्व की सांस्कृतिक पृष्ठभूमि भक्ति, वीरता और लोकपरंपराओं से परिपूर्ण थी। लोकगीतों, लोकनाट्य और साहित्य ने समाज में स्वाभिमान और सामूहिकता की भावना जीवित रखी। यही सांस्कृतिक धारा आगे चलकर स्वतंत्रता संग्राम के दौरान राष्ट्रीय चेतना के रूप में परिवर्तित हुई और झांसी मण्डल को एक विशेष पहचान प्रदान की।

## 5 – झांसी मण्डल के लोकगीत और स्वतंत्रता चेतना

### 5.1 लोकगीतों की परंपरा और उनकी सामाजिक भूमिका

लोकगीत भारतीय संस्कृति का जीवंत दस्तावेज़ हैं। ये गीत केवल मनोरंजन के साधन नहीं, बल्कि सामाजिक, धार्मिक और राजनीतिक जीवन के भी सशक्त अभिव्यक्ति माध्यम रहे हैं। झांसी मण्डल, जो बुंदेलखंड की सांस्कृतिक आत्मा को प्रतिबिंबित करता है, अपने लोकगीतों के लिए विशेष पहचान रखता है। यहाँ के गीत जीवन के प्रत्येक अवसर—जन्म, विवाह, कृषि-कार्य, धार्मिक अनुष्ठान और उत्सव—में गाए जाते रहे हैं।

लोकगीतों की परंपरा यहाँ मौखिक रूप से पीढ़ी-दर-पीढ़ी स्थानांतरित होती रही है। इनमें भाषा प्रायः बुंदेली और ब्रज रही है, जो स्थानीय समाज की भावनाओं को सहज रूप से व्यक्त करती है। ग्रामीण जीवन में स्त्रियाँ विशेष रूप से लोकगीतों की संवाहक रही हैं। वे खेतों, आँगनों और मेलों में गीत गाकर न केवल सामूहिक उत्सव का निर्माण करती थीं, बल्कि सामाजिक मूल्यों को भी संजोए रखती थीं।

सामाजिक भूमिका की दृष्टि से देखा जाए तो लोकगीत लोगों के बीच **सामूहिक एकता** और **सांस्कृतिक पहचान** के प्रमुख साधन बने। एक ओर ये गीत श्रम के बीच राहत और आनंद प्रदान करते थे, वहीं दूसरी ओर समाज में नैतिकता, साहस और स्वाभिमान के संदेश भी पहुँचाते थे।

1857 की क्रांति और उसके बाद स्वतंत्रता आंदोलन के दौर में इन्हीं लोकगीतों ने **राजनीतिक चेतना और प्रतिरोध** का रूप धारण किया। रानी लक्ष्मीबाई और शहीदों की गाथाएँ गीतों में गाई जाने लगीं। किसानों और मजदूरों के संघर्ष लोकगीतों में व्यक्त हुए। महिलाओं ने भी अपने गीतों में प्रतिरोध और प्रेरणा की आवाज़ बुलंद की।

इस प्रकार लोकगीत केवल सांस्कृतिक धरोहर नहीं रहे, बल्कि स्वतंत्रता चेतना के सशक्त संवाहक बने। उनकी सामूहिकता और मौखिक परंपरा ने उन्हें जनमानस तक पहुँचने का सबसे प्रभावी माध्यम बना दिया।

### 5.2 स्वतंत्रता आंदोलन काल के लोकगीत

झांसी मण्डल में स्वतंत्रता आंदोलन के समय लोकगीत केवल मनोरंजन का साधन न रहकर प्रतिरोध और चेतना के स्वर बन गए। इन गीतों में जहाँ रानी लक्ष्मीबाई जैसी वीरांगनाओं की गाथाएँ अमर हो गईं, वहीं किसान और मजदूरों के संघर्ष, तथा स्त्रियों की प्रेरणादायी भूमिका भी प्रमुखता से सामने आई।

#### 5.2.1 वीर गीत (रानी लक्ष्मीबाई व शहीदों पर)

वीर गीतों की परंपरा बुंदेलखंड की पहचान है। आल्हा-ऊदल की गाथाएँ पहले से ही इस क्षेत्र में साहस और बलिदान की प्रेरणा देती रही थीं। स्वतंत्रता आंदोलन के समय इन्हीं वीर गीतों का स्वरूप और अधिक राष्ट्रवादी हो गया।

रानी लक्ष्मीबाई पर रचे गए गीतों ने जनता को अदम्य साहस की प्रेरणा दी। ग्रामीण समाज में गाए जाने वाले गीतों में उनकी वीरता, घुड़सवारी, युद्ध-कौशल और बलिदान का वर्णन मिलता है।

लोक में प्रचलित पंक्ति *"खूब लड़ी मर्दानी, वह तो झांसी वाली रानी थी"* आज भी उनकी छवि को जीवित रखती है। ऐसे वीर गीत केवल रानी लक्ष्मीबाई तक सीमित नहीं थे; अन्य शहीदों और क्रांतिकारियों के बलिदान को भी लोकगीतों ने अमर कर दिया। ये गीत समाज में प्रतिरोध और स्वतंत्रता की ललक को जगाने का कार्य करते रहे।

#### 5.2.2 किसान और मजदूर गीत

स्वतंत्रता आंदोलन के समय किसान और मजदूर वर्ग अंग्रेजों के अत्याचारों और आर्थिक शोषण से सबसे अधिक पीड़ित था। करों की अधिकता, लगान की कठोरता और संसाधनों की लूट ने ग्रामीण जीवन को संकटग्रस्त कर दिया। इन परिस्थितियों का चित्रण लोकगीतों में स्पष्ट दिखाई देता है।

किसानों के गीतों में अक्सर अन्याय और शोषण के खिलाफ प्रतिरोध की पुकार सुनाई देती है। लोकगीतों में यह संदेश मिलता है कि *"धरती हमारी, मेहनत हमारी, पर सुख छीन ले अंग्रेज़"*। इस प्रकार के गीत केवल दुःख की अभिव्यक्ति नहीं थे, बल्कि संघर्ष की चेतना जगाने वाले भी थे।

मजदूर वर्ग ने भी अपने गीतों में श्रम और अन्याय के बीच संतुलन खोजने की कोशिश की। अंग्रेज़ी हुकूमत के प्रति असंतोष गीतों में स्पष्ट झलकता है। सामूहिक रूप से गाए गए ये गीत जनता को संगठित करते और उन्हें एक साझा संघर्ष के लिए प्रेरित करते।

### 5.2.3 स्त्रियों के गीतों में प्रतिरोध व प्रेरणा

झांसी मण्डल की स्त्रियाँ लोकगीतों की परंपरा की सबसे बड़ी संवाहक रही हैं। स्वतंत्रता आंदोलन के दौरान उन्होंने अपने गीतों को प्रतिरोध और प्रेरणा का माध्यम बनाया। घर-आँगन में गाए गए गीतों में अंग्रेजों की नीतियों के प्रति असंतोष और स्वतंत्रता के प्रति लालसा प्रकट होती थी।

इन गीतों में रानी लक्ष्मीबाई को आदर्श के रूप में प्रस्तुत किया गया। महिलाएँ गीतों में रानी की वीरता का उल्लेख कर स्वयं को भी साहस और आत्मबल के लिए प्रेरित करतीं। विवाह, तीज-त्योहार और सामूहिक अवसरों पर गाए जाने वाले गीतों ने राष्ट्रीय चेतना को घर-घर पहुँचाया।

स्त्रियों के गीतों की विशेषता यह रही कि उनमें प्रत्यक्ष राजनीतिक भाषा न होते हुए भी गहरे प्रतिरोध और प्रेरणा के स्वर मौजूद थे। उदाहरण स्वरूप, माताएँ अपने बेटों को गीतों में यह संदेश देतीं कि वे पराधीनता स्वीकार न करें और देश की रक्षा के लिए बलिदान को तत्पर रहें।

### 5.3 लोकगीतों में स्वतंत्रता चेतना का स्वरूप

झांसी मण्डल के लोकगीतों में स्वतंत्रता चेतना का स्वरूप बहुआयामी रहा है। ये गीत केवल घटनाओं का वर्णन नहीं करते, बल्कि उनमें जनमानस की भावनाएँ, पीड़ा, प्रतिरोध और संघर्ष की प्रेरणा जीवंत दिखाई देती है। इन गीतों ने स्वतंत्रता आंदोलन को केवल राजनीतिक घटना न बनाकर, सामाजिक और सांस्कृतिक चेतना का रूप दिया।

सबसे पहले, लोकगीतों में **वीरता और बलिदान** की अभिव्यक्ति स्पष्ट रूप से दिखाई देती है। रानी लक्ष्मीबाई और अन्य शहीदों के गीतों में वीरता के स्वर प्रमुख हैं। इन गीतों ने जनता को यह संदेश दिया कि स्वतंत्रता के लिए संघर्ष करना ही सर्वोच्च धर्म है। *"खूब लड़ी मर्दानी, वह तो झांसी वाली रानी थी"* जैसी पंक्तियाँ केवल काव्यात्मक नहीं, बल्कि स्वतंत्रता चेतना की जीवंत पुकार थीं।

दूसरे, लोकगीतों में **अन्याय और शोषण के प्रति असंतोष** का स्वरूप भी दिखाई देता है। किसानों और मजदूरों के गीतों में अंग्रेजों द्वारा किए जा रहे कराधान और आर्थिक शोषण का सीधा उल्लेख मिलता है। इन गीतों में यह प्रतिरोध झलकता है कि जनता अब पराधीनता सहन करने को तैयार नहीं है। गीतों के माध्यम से यह असंतोष सामूहिक चेतना में बदलता गया।

तीसरे, लोकगीतों में **सामूहिकता और एकता** की भावना प्रकट होती है। गाँवों में सामूहिक रूप से गाए जाने वाले ये गीत स्वतंत्रता आंदोलन को व्यापक जनांदोलन बनाने में सहायक बने। लोकगीतों ने सामाजिक और जातिगत विभाजनों को पीछे छोड़कर सभी को स्वतंत्रता के साझा उद्देश्य से जोड़ा।

चौथे, लोकगीतों में **महिलाओं की चेतना और भूमिका** का स्वरूप विशेष रूप से महत्वपूर्ण रहा। स्त्रियों द्वारा गाए गए गीतों में अपने पुत्रों और पतियों को स्वतंत्रता के लिए बलिदान हेतु प्रेरित करने के स्वर मिलते हैं। इन गीतों में मातृत्व, त्याग और साहस का अद्वितीय संगम दिखाई देता है।

पाँचवें, लोकगीतों में **धार्मिक और सांस्कृतिक प्रतीकों** का भी उपयोग मिलता है। स्वतंत्रता को धर्म से जोड़ा गया और अंग्रेजों के खिलाफ संघर्ष को धार्मिक कर्तव्य बताया गया। देवी-देवताओं और ऐतिहासिक नायकों का आह्वान करके स्वतंत्रता की लड़ाई को पवित्र और न्यायोचित ठहराया गया।

इन सभी रूपों से स्पष्ट होता है कि झांसी मण्डल के लोकगीतों में स्वतंत्रता चेतना केवल राजनीतिक विद्रोह की भाषा तक सीमित नहीं थी, बल्कि यह सांस्कृतिक, सामाजिक और धार्मिक भावनाओं से भी जुड़ी हुई थी। यही कारण है कि इन गीतों ने जनमानस में गहरी पैठ बनाई और स्वतंत्रता संग्राम को एक व्यापक सांस्कृतिक आंदोलन का स्वरूप दिया।

संक्षेप में, लोकगीतों में स्वतंत्रता चेतना का स्वरूप वीरता, बलिदान, प्रतिरोध, सामूहिकता और सांस्कृतिक प्रतीकों से निर्मित हुआ। इन गीतों ने समाज को यह विश्वास दिलाया कि स्वतंत्रता केवल नेताओं का उद्देश्य नहीं, बल्कि हर व्यक्ति का कर्तव्य है।

### 5.4 मौखिक परंपरा और जनचेतना में योगदान

झांसी मण्डल की सांस्कृतिक धरोहर का सबसे महत्त्वपूर्ण पक्ष इसकी **मौखिक परंपरा (Oral Tradition)** है। लोकगीत, लोककथाएँ, वीरगाथाएँ और लोकनाट्य – ये सभी मौखिक रूप से पीढ़ी-दर-पीढ़ी स्थानांतरित होते रहे। इस परंपरा ने न केवल सांस्कृतिक निरंतरता को जीवित रखा, बल्कि स्वतंत्रता आंदोलन के दौरान जनचेतना जगाने का सशक्त माध्यम भी बनी।

मौखिक परंपरा की सबसे बड़ी विशेषता इसकी **सुगम्यता और सार्वभौमिकता** है। यह साक्षरता की सीमा से परे जाकर हर वर्ग तक पहुँचती थी। ग्रामीण समाज, विशेषकर अशिक्षित लोग, समाचारपत्रों और लिखित साहित्य तक आसानी से नहीं पहुँच पाते थे। ऐसे में मौखिक रूप से गाए गए लोकगीत और सुनाई जाने वाली गाथाएँ उनके लिए स्वतंत्रता संग्राम का संदेशवाहक बनीं।

रानी लक्ष्मीबाई और अन्य शहीदों की गाथाएँ लोकगीतों और लोककथाओं में समाहित होकर घर-घर पहुँचीं। जब कोई वृद्ध व्यक्ति गाँव की चौपाल पर बैठकर वीरगाथा सुनाता या महिलाएँ सामूहिक रूप से खेतों में गीत गातीं, तो वह श्रोताओं

के मन में स्वतंत्रता और प्रतिरोध की चेतना जगाता। इस तरह मौखिक परंपरा स्वतंत्रता आंदोलन का **जीवंत प्रचार माध्यम** बन गई।

लोकनाट्य और नौटंकी भी मौखिक परंपरा का हिस्सा थे। इन नाट्य रूपों के माध्यम से गाँवों में बड़ी संख्या में लोग इकट्ठा होते और कथाओं के रूप में स्वतंत्रता का संदेश प्राप्त करते। इनमें रानी लक्ष्मीबाई, आल्हा-ऊदल और अन्य वीर नायकों की गाथाएँ प्रस्तुत की जातीं, जो जनसमूह को प्रेरित करतीं।

मौखिक परंपरा का योगदान केवल संदेश देने तक सीमित नहीं रहा, बल्कि इसने **सामूहिक चेतना** का निर्माण किया। सामूहिक गायन और सुनने की प्रक्रिया ने लोगों में आपसी एकता और साझा उद्देश्य की भावना विकसित की। जातिगत और सामाजिक विभाजन को पीछे छोड़कर सब लोग स्वतंत्रता की साझा आकांक्षा से जुड़ते गए।

इसके अतिरिक्त, मौखिक परंपरा में स्त्रियों की भूमिका विशेष उल्लेखनीय रही। महिलाएँ घर-आँगन में गाए जाने वाले गीतों के माध्यम से परिवार को स्वतंत्रता चेतना से जोड़ती थीं। वे अपने पुत्रों और पतियों को बलिदान और साहस के लिए प्रेरित करतीं। इस तरह मौखिक परंपरा ने स्त्रियों को भी स्वतंत्रता आंदोलन का सक्रिय अंग बना दिया।

संक्षेप में, झांसी मण्डल की मौखिक परंपरा ने स्वतंत्रता आंदोलन में जनचेतना जगाने का अद्वितीय कार्य किया। इसकी सरल भाषा, सामूहिक स्वरूप और भावनात्मक अभिव्यक्ति ने इसे आम जनता तक पहुँचने का सबसे प्रभावी साधन बना दिया। यही कारण है कि झांसी की सांस्कृतिक स्मृति आज भी लोकगीतों और गाथाओं के रूप में जीवित है और स्वतंत्रता चेतना का प्रेरक स्रोत बनी हुई

## 6 – झांसी मण्डल का साहित्य और स्वतंत्रता चेतना

### 6.1 स्वतंत्रता आंदोलन कालीन साहित्य का स्वरूप

स्वतंत्रता आंदोलन का प्रभाव केवल राजनीतिक और सामाजिक क्षेत्र तक सीमित नहीं रहा, बल्कि साहित्यिक अभिव्यक्तियों में भी व्यापक रूप से दिखाई दिया। झांसी मण्डल, जो 1857 की क्रांति का प्रमुख केंद्र रहा, स्वतंत्रता आंदोलन के समय साहित्यिक दृष्टि से भी सक्रिय क्षेत्र था। यहाँ के साहित्य में राष्ट्रप्रेम, बलिदान, साहस और प्रतिरोध की भावना स्पष्ट रूप से परिलक्षित होती है।

स्वतंत्रता आंदोलन के दौरान साहित्य का स्वरूप मुख्यतः राष्ट्रवादी, प्रेरणादायी और जनोन्मुखी रहा। कवियों और लेखकों ने अपने लेखन को केवल कलात्मक अभिव्यक्ति तक सीमित न रखकर उसे जनता के लिए प्रेरणा और संघर्ष का माध्यम बनाया। इस दौर का साहित्य जनचेतना जगाने का उपकरण था, जिसने जनता में यह विश्वास पैदा किया कि स्वतंत्रता केवल सपना नहीं बल्कि सामूहिक संघर्ष से प्राप्त होने वाला लक्ष्य है।

झांसी मण्डल के साहित्य में वीर रस और करुण रस का अद्वितीय समन्वय मिलता है। वीर रस के माध्यम से जहाँ साहस और संघर्ष की प्रेरणा दी गई, वहीं करुण रस में गुलामी की पीड़ा और शहीदों के बलिदान की वेदना अभिव्यक्त हुई। इस प्रकार साहित्य ने जनमानस को भावनात्मक रूप से आंदोलित किया और उन्हें स्वतंत्रता संग्राम के लिए तैयार किया।

इस साहित्यिक धारा में कविता, लोककाव्य, नाटक और नौटंकी जैसी विधाओं का महत्त्वपूर्ण योगदान रहा। कविता और लोकगीतों में तत्कालीन परिस्थितियों का जीवंत चित्रण हुआ, जबकि नाटक और नौटंकी के माध्यम से बड़े जनसमूह को संगठित कर स्वतंत्रता का संदेश दिया गया।

संक्षेप में कहा जाए तो झांसी मण्डल का स्वतंत्रता आंदोलन कालीन साहित्य संघर्ष और चेतना का साहित्य था। इसने न केवल रानी लक्ष्मीबाई और अन्य शहीदों की गाथाओं को अमर किया, बल्कि जनता में स्वतंत्रता के लिए निरंतर प्रेरणा भी जगाई।

### 6.2 प्रमुख साहित्यकार एवं उनकी रचनाएँ

#### 6.2.1 कवि और लोककवि

झांसी मण्डल की साहित्यिक परंपरा स्वतंत्रता आंदोलन के दौर में विशेष रूप से समृद्ध रही। यहाँ के कवियों और लोककवियों ने राष्ट्रप्रेम, बलिदान और संघर्ष की गाथाओं को अपनी रचनाओं में स्वर दिया। इन रचनाओं ने जनता के हृदय में देशप्रेम और प्रतिरोध की ज्वाला प्रज्वलित की।

इस क्षेत्र में सर्वाधिक प्रसिद्ध रचना सुभद्राकुमारी चौहान की कविता *"झांसी की रानी"* है, जिसमें रानी लक्ष्मीबाई की वीरता का अमर चित्रण मिलता है। यद्यपि चौहान का जन्म नागपुर में हुआ था, पर उनकी कविता झांसी से जुड़ी होने के कारण झांसी मण्डल की सांस्कृतिक चेतना का प्रतीक बन गई।

लोककवियों ने भी स्वतंत्रता आंदोलन की घटनाओं को गीत और कवित्त के रूप में प्रस्तुत किया। ग्राम्य कवियों ने रानी लक्ष्मीबाई और 1857 की क्रांति के शहीदों पर ऐसे गीत रचे, जो गाँव-गाँव में गाए जाते थे। ये लोकगीत जनता को साहस और आत्मबल प्रदान करते और स्वतंत्रता की आकांक्षा को प्रखर करते।

इसके अतिरिक्त, कई स्थानीय कवियों ने बुंदेली और ब्रज भाषा में रचनाएँ कीं, जिनमें गुलामी की पीड़ा और स्वतंत्रता की लालसा का गहन चित्रण मिलता है। उदाहरणस्वरूप, कुछ कवियों ने शोषण और कराधान के विरोध में व्यंग्यात्मक कविताएँ लिखीं, जो जनता को हँसी के साथ-साथ प्रतिरोध का संदेश भी देती थीं।

#### 6.2.2 नाटक, नौटंकी व लोकनाट्य

नाटक और नौटंकी झांसी मण्डल की सांस्कृतिक अभिव्यक्ति के प्रभावी माध्यम रहे। स्वतंत्रता आंदोलन के दौरान इन विधाओं ने जनता को संगठित करने और स्वतंत्रता संदेश पहुँचाने का कार्य किया। नौटंकी और स्वांग विशेष रूप से ग्रामीण समाज में लोकप्रिय थे। इन प्रस्तुतियों में वीरांगना रानी लक्ष्मीबाई और अन्य शहीदों की गाथाएँ

नाटकीय रूप में प्रस्तुत की जाती थीं। दर्शक बड़ी संख्या में एकत्र होकर इन प्रस्तुतियों को देखते और स्वतः ही स्वतंत्रता चेतना से प्रेरित होते।

कुछ स्थानीय नाटककारों ने ऐतिहासिक प्रसंगों को आधार बनाकर स्वतंत्रता संदेश प्रसारित किया। इनमें अंग्रेजों के अत्याचार, करों की कठोरता और किसानों की दुर्दशा का चित्रण होता था। मंचीय रूप में इन घटनाओं को देखकर जनता में आक्रोश और प्रतिरोध की भावना प्रबल होती।

लोकनाट्य की परंपरा में *अखाड़ा* और *कीर्तन मंडलियाँ* भी महत्त्वपूर्ण थीं। ये लोकनाट्य धार्मिक कथाओं के साथ-साथ सामाजिक और राजनीतिक संदेश भी देते थे। इनमें देवी-देवताओं और वीर नायकों का आह्वान कर स्वतंत्रता संघर्ष को धर्मसम्मत और न्यायोचित ठहराया जाता था।

इन नाटकों और नौटंकियों की विशेषता यह थी कि ये केवल शिक्षित वर्ग तक सीमित नहीं थे, बल्कि ग्रामीण और अशिक्षित जनता तक भी सहजता से पहुँचते थे। इस प्रकार ये विधाएँ जनजागरण का सशक्त साधन बनीं।

### 6.3 साहित्य में राष्ट्रप्रेम, बलिदान और संघर्ष का चित्रण

स्वतंत्रता आंदोलन के समय झांसी मण्डल का साहित्य केवल कलात्मक अभिव्यक्ति नहीं रहा, बल्कि यह जनमानस को राष्ट्रप्रेम, बलिदान और संघर्ष के लिए प्रेरित करने का सशक्त साधन बना। यहाँ के कवियों, लोककवियों और नाट्यकर्मियों ने अपनी रचनाओं में स्वतंत्रता की आकांक्षा को स्वर दिया और गुलामी की बेड़ियों को तोड़ने के लिए जनता को संगठित किया।

सबसे पहले, साहित्य में **राष्ट्रप्रेम** का स्वर अत्यंत प्रबल दिखाई देता है। कविताओं और गीतों में भारतभूमि को माँ के रूप में चित्रित कर उसके लिए त्याग और बलिदान को सर्वोच्च कर्तव्य बताया गया। रानी लक्ष्मीबाई और अन्य शहीदों को राष्ट्रीय गौरव का प्रतीक बनाकर प्रस्तुत किया गया। इस प्रकार साहित्य ने राष्ट्रप्रेम को केवल भावनात्मक नहीं बल्कि कर्तव्यपरक भावना के रूप में स्थापित किया।

दूसरे, साहित्य में **बलिदान** की गाथाएँ प्रमुखता से सामने आती हैं। स्वतंत्रता संग्राम में शहीद हुए सेनानियों और किसानों को कवियों ने अमर कर दिया। लोकगीतों और कविताओं में माताएँ अपने पुत्रों को देशहित में बलिदान के लिए प्रेरित करतीं। नाटक और नौटंकी में बलिदान को आदर्श के रूप में प्रस्तुत किया जाता। इस प्रकार साहित्य ने यह संदेश दिया कि स्वतंत्रता प्राप्ति के लिए व्यक्तिगत सुख और जीवन का त्याग करना आवश्यक है।

तीसरे, साहित्य में **संघर्ष** की भावना को जीवंत किया गया। अंग्रेजी शासन के अन्याय और शोषण को कवियों और लेखकों ने अपनी रचनाओं में उजागर किया। किसानों की दुर्दशा, मजदूरों का शोषण और स्त्रियों की पीड़ा का चित्रण कर साहित्य ने जनता में आक्रोश उत्पन्न किया। नाट्य प्रस्तुतियों में अंग्रेज अधिकारियों की कठोर नीतियों और कराधान के बोझ को व्यंग्य और व्यथा दोनों रूपों में दिखाया गया। इससे जनता में प्रतिरोध की चेतना और संघर्ष का उत्साह जाग्रत हुआ।

झांसी मण्डल के साहित्य में राष्ट्रप्रेम, बलिदान और संघर्ष का चित्रण केवल आदर्शवादी नहीं था, बल्कि व्यावहारिक रूप से जनता को संगठित करने का कार्य करता था। लोकभाषाओं—बुंदेली और ब्रज—में लिखे और गाए गए साहित्यिक स्वरूप सीधे आम जनता तक पहुँचते और उन्हें स्वतंत्रता आंदोलन से जोड़ते।

संक्षेप में, झांसी मण्डल का साहित्य स्वतंत्रता आंदोलन में जनचेतना का सशक्त संवाहक रहा। इसने राष्ट्रप्रेम को आदर्श, बलिदान को कर्तव्य और संघर्ष को जीवन-मूल्य के रूप में प्रस्तुत किया। यही कारण है कि यह साहित्य आज भी स्वतंत्रता चेतना का अमर दस्तावेज़ माना जाता है।

### 6.4 हिंदी साहित्य में झांसी मण्डल का योगदान

हिंदी साहित्य में झांसी मण्डल का योगदान स्वतंत्रता आंदोलन के संदर्भ में अत्यंत महत्त्वपूर्ण है। यह क्षेत्र न केवल ऐतिहासिक दृष्टि से बल्कि साहित्यिक अभिव्यक्तियों के स्तर पर भी स्वतंत्रता चेतना का केंद्र रहा। यहाँ की लोकभाषाएँ—बुंदेली और ब्रज—ने साहित्यिक सृजन को समृद्ध किया और राष्ट्रप्रेम, बलिदान व संघर्ष की चेतना को जनमानस तक पहुँचाने में सशक्त भूमिका निभाई।

सबसे पहले, झांसी मण्डल ने हिंदी साहित्य को **वीर रस** से परिपूर्ण काव्य परंपरा दी। रानी लक्ष्मीबाई की गाथाएँ कवियों और लोककवियों ने इस प्रकार प्रस्तुत कीं कि वे राष्ट्रप्रेम का प्रतीक बन गईं। सुभद्राकुमारी चौहान की कविता *"झांसी की रानी"* तो हिंदी साहित्य की अमर कृति बन गई, जिसने झांसी और रानी लक्ष्मीबाई को राष्ट्रीय स्मृति में स्थायी स्थान दिलाया। यद्यपि चौहान झांसी की मूल निवासी नहीं थीं, पर उनकी कविता ने झांसी मण्डल की ऐतिहासिक और सांस्कृतिक पहचान को साहित्यिक रूप में अमर कर दिया।

दूसरे, झांसी मण्डल के **लोककवियों और ग्रामीण कवियों** ने बुंदेली और ब्रज भाषा में असंख्य गीत और कवित्त रचे। ये रचनाएँ स्वतंत्रता आंदोलन के मौखिक इतिहास के रूप में मानी जा सकती हैं। गाँवों में गाए गए गीतों ने न केवल तत्कालीन संघर्ष का दस्तावेज़ प्रस्तुत किया बल्कि आने वाली पीढ़ियों तक स्वतंत्रता की भावना को पहुँचाने का कार्य भी किया।

तीसरे, झांसी मण्डल ने हिंदी साहित्य को **नाटक और लोकनाट्य की परंपरा** से समृद्ध किया। यहाँ की नौटंकी और अखाड़ों ने स्वतंत्रता आंदोलन की घटनाओं को नाटकीय रूप में प्रस्तुत कर साहित्य और संस्कृति का अद्भुत संगम किया। इन नाट्य प्रस्तुतियों ने दर्शकों को प्रत्यक्ष रूप से स्वतंत्रता की चेतना से जोड़ा और उन्हें संघर्ष में भाग लेने के लिए प्रेरित किया।

चौथे, झांसी मण्डल का योगदान यह भी है कि यहाँ का साहित्य **जनोन्मुखी** रहा। इसका उद्देश्य केवल साहित्यिक सौंदर्य नहीं, बल्कि सामाजिक परिवर्तन और राष्ट्रीय जागरण

था। इस क्षेत्र के साहित्यकारों ने साहित्य को जनचेतना का माध्यम बनाया। यही कारण है कि झांसी मण्डल का साहित्य अकादमिक ग्रंथों के साथ-साथ लोकस्मृति में भी जीवित है।

संक्षेप में, झांसी मण्डल ने हिंदी साहित्य को स्वतंत्रता आंदोलन की जीवंत धारा प्रदान की। यहाँ के कवियों, लोककवियों और नाट्यकर्मियों ने अपनी रचनाओं के माध्यम से स्वतंत्रता चेतना को अमर किया। झांसी मण्डल का योगदान यह सिद्ध करता है कि साहित्य केवल अभिव्यक्ति का साधन नहीं, बल्कि राष्ट्रनिर्माण और जनजागरण का प्रभावी उपकरण भी हो सकता है। यही कारण है कि हिंदी साहित्य में झांसी मण्डल को एक विशेष स्थान प्राप्त है।

## 7 – लोकगीतों और साहित्य का तुलनात्मक अध्ययन

### 7.1 अभिव्यक्ति का माध्यम: मौखिक परंपरा बनाम लिखित परंपरा

स्वतंत्रता आंदोलन के दौर में झांसी मण्डल की सांस्कृतिक चेतना दो प्रमुख धाराओं में अभिव्यक्त हुई—**मौखिक परंपरा (लोकगीत)** और **लिखित परंपरा (साहित्य)**। दोनों ने स्वतंत्रता की भावना को संप्रेषित करने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई, किंतु इनके अभिव्यक्ति के माध्यम और पहुँच में भिन्नता रही।

मौखिक परंपरा का सबसे बड़ा आधार **लोकगीत** थे। इनकी विशेषता यह रही कि इन्हें गाने और सुनने के लिए साक्षरता की आवश्यकता नहीं थी। ग्रामीण समाज, जिसमें साक्षरता का स्तर कम था, लोकगीतों के माध्यम से स्वतंत्रता का संदेश ग्रहण करता था। स्त्रियाँ खेत-खलिहानों, आँगनों और मेलों में सामूहिक रूप से गीत गातीं और इस तरह स्वतंत्रता का संदेश सहजता से प्रसारित होता। मौखिक परंपरा में भाषा स्थानीय—बुंदेली और ब्रज—थी, जो लोगों के हृदय तक सीधे पहुँचती थी। इसमें भावनात्मक अपील और तात्कालिक प्रभाव बहुत अधिक था।

इसके विपरीत, **लिखित परंपरा** मुख्यतः शिक्षित वर्ग के बीच प्रभावी रही। कविताएँ, नाटक, नौटंकी और निबंध स्वतंत्रता चेतना को वैचारिक और संगठित रूप में प्रस्तुत करते थे। लिखित साहित्य में ऐतिहासिक घटनाओं का दस्तावेजीकरण, शहीदों की गाथाएँ और राष्ट्रप्रेम का वैचारिक स्वरूप मिलता है। इसने जनता को यह सोचने पर विवश किया कि स्वतंत्रता केवल भावनात्मक आकांक्षा नहीं, बल्कि एक सुनियोजित संघर्ष है।

जहाँ मौखिक परंपरा तत्कालीन परिस्थिति का **लोकमानस पर सीधा प्रभाव** डालती थी, वहीं लिखित परंपरा ने स्वतंत्रता आंदोलन को **वैचारिक आधार और ऐतिहासिक स्मृति** प्रदान की। दोनों का अभिव्यक्ति का तरीका भिन्न था—एक ने भावनाओं और स्वरों से जनता को आंदोलित किया, दूसरे ने शब्दों और विचारों से चेतना को गहराई दी। संक्षेप में, झांसी मण्डल में मौखिक और लिखित दोनों परंपराएँ स्वतंत्रता चेतना की संवाहक रहीं। लोकगीतों ने जनमानस को भावनात्मक रूप से जोड़ा, जबकि साहित्य ने उसे बौद्धिक और ऐतिहासिक दृष्टि से संगठित किया। यही कारण है कि इन दोनों धाराओं का समन्वय स्वतंत्रता आंदोलन की सबसे बड़ी शक्ति बना।

### 7.2 स्वतंत्रता चेतना के प्रसार में दोनों की भूमिका

झांसी मण्डल में स्वतंत्रता आंदोलन के दौरान **लोकगीतों** और **साहित्य** दोनों ने स्वतंत्रता चेतना के प्रसार में अद्वितीय भूमिका निभाई। यद्यपि इनकी अभिव्यक्ति की विधियाँ अलग थीं, किंतु उद्देश्य एक ही था—जनमानस को स्वतंत्रता के लिए प्रेरित करना और उन्हें अंग्रेजी शासन के विरुद्ध संगठित करना।

**लोकगीतों की भूमिका** सबसे पहले सामने आती है। मौखिक परंपरा पर आधारित ये गीत ग्रामीण और अशिक्षित समाज तक स्वतंत्रता का संदेश पहुँचाने का सबसे सशक्त माध्यम बने। स्त्रियाँ, किसान और मजदूर अपने-अपने जीवन प्रसंगों में गीत गाते हुए स्वतंत्रता आंदोलन की पीड़ा और संघर्ष का अनुभव साझा करते थे। वीर गीतों में रानी लक्ष्मीबाई और शहीदों की गाथाएँ सुनकर जनता में साहस और प्रतिरोध की भावना जागृत होती। इसी तरह किसान गीत अंग्रेजों के शोषण के खिलाफ जनता में असंतोष का भाव भरते। लोकगीतों ने समाज को भावनात्मक रूप से आंदोलित कर स्वतंत्रता चेतना को गहराई से जनमानस में पहुँचाया।

इसके विपरीत, **साहित्य की भूमिका** वैचारिक और बौद्धिक स्तर पर अधिक प्रभावी रही। कविताओं, नाटकों और लोकनाट्य के माध्यम से स्वतंत्रता को एक राष्ट्रीय ध्येय के रूप में प्रस्तुत किया गया। कवियों ने राष्ट्र को माँ का रूप देकर उसके लिए बलिदान को सर्वोच्च कर्तव्य बताया। नाट्य प्रस्तुतियों में अंग्रेजों के अत्याचार और कराधान की कठोरता का चित्रण कर लोगों में आक्रोश पैदा किया गया। लिखित साहित्य ने स्वतंत्रता को केवल भावनात्मक आकांक्षा न रहकर एक सुनियोजित, सामूहिक और न्यायोचित संघर्ष के रूप में चित्रित किया।

दोनों की भूमिका का सबसे बड़ा महत्व यह था कि उन्होंने **जनसामान्य और शिक्षित वर्ग के बीच सेतु का कार्य किया**। लोकगीतों ने गाँव-गाँव में चेतना जगाई, जबकि साहित्य ने शहरों और शैक्षिक केंद्रों में आंदोलन को वैचारिक आधार दिया। इस प्रकार स्वतंत्रता चेतना का प्रसार केवल सीमित वर्ग तक न रहकर व्यापक समाज तक पहुँचा।

संक्षेप में, झांसी मण्डल में लोकगीतों ने भावनात्मक और सामूहिक चेतना को जाग्रत किया, जबकि साहित्य ने उसे विचारशीलता और दिशा प्रदान की। दोनों माध्यमों की संयुक्त भूमिका ने स्वतंत्रता चेतना को गहराई और व्यापकता दी, जो आंदोलन की सफलता का आधार बनी।

### 7.3 ग्रामीण समाज व शिक्षित वर्ग पर प्रभाव

स्वतंत्रता आंदोलन के दौरान झांसी मण्डल में लोकगीतों और साहित्य ने अलग-अलग वर्गों पर गहरा प्रभाव डाला। जहाँ लोकगीतों ने ग्रामीण समाज को आंदोलित और संगठित किया, वहीं साहित्य ने शिक्षित वर्ग को वैचारिक दिशा और आंदोलन के लिए प्रेरणा प्रदान की।

**ग्रामीण समाज पर प्रभाव** सबसे स्पष्ट था। झांसी मण्डल की अधिकांश जनता गाँवों में निवास करती थी और उनमें साक्षरता का स्तर कम था। ऐसे में लिखित साहित्य उनके लिए आसानी से सुलभ नहीं था। लोकगीतों ने इस कमी को पूरा किया। खेतों, चौपालों और घर-आँगनों में गाए जाने वाले गीत सीधे जनता की भावनाओं से जुड़ते थे। वीर गीतों में रानी लक्ष्मीबाई और शहीदों की गाथाएँ सुनकर ग्रामीण समाज में साहस और प्रतिरोध की भावना प्रबल होती। किसानों और मजदूरों के गीतों ने अंग्रेजों के शोषण और अन्याय को उजागर किया, जिससे उनमें असंतोष और विद्रोह की चेतना उत्पन्न हुई। स्त्रियों के गीतों ने घरेलू वातावरण को भी स्वतंत्रता के प्रति समर्पित कर दिया। इस प्रकार लोकगीत ग्रामीण समाज की चेतना का सबसे सशक्त साधन बने।

**शिक्षित वर्ग पर साहित्य का प्रभाव** उतना ही गहरा था। झांसी और बुंदेलखंड क्षेत्र में पनप रहे शिक्षण संस्थान, मंडलियाँ और अखाड़े स्वतंत्रता आंदोलन के वैचारिक केंद्र बने। कविताएँ और नाट्य प्रस्तुतियाँ शिक्षित वर्ग को न केवल भावनात्मक रूप से प्रभावित करतीं, बल्कि उन्हें आंदोलन में सक्रिय भागीदारी के लिए प्रेरित करतीं। साहित्य में बलिदान और संघर्ष का आदर्श प्रस्तुत कर युवाओं को स्वतंत्रता संग्राम की ओर आकर्षित किया गया। विशेष रूप से नौटंकी और नाटक जैसे मंचीय रूपों ने शिक्षित और अर्ध-शिक्षित वर्ग को एक साथ प्रभावित किया।

ग्रामीण समाज और शिक्षित वर्ग दोनों पर इन अभिव्यक्तियों का सम्मिलित प्रभाव यह रहा कि स्वतंत्रता आंदोलन केवल कुछ चुनिंदा नेताओं तक सीमित न रहकर जनांदोलन बन गया। लोकगीतों ने गाँवों में चेतना जगाई और साहित्य ने शहरों तथा कस्बों में उसे दिशा दी। इस प्रकार दोनों धाराओं ने मिलकर आंदोलन को व्यापक और सर्वव्यापी रूप प्रदान किया।

संक्षेप में, लोकगीतों ने ग्रामीण समाज की आत्मा को आंदोलित किया, जबकि साहित्य ने शिक्षित वर्ग को वैचारिक आधार दिया। दोनों का प्रभाव मिलकर स्वतंत्रता आंदोलन को झांसी मण्डल में गहरी जड़ें प्रदान करने में सहायक हुआ।

## 8 – निष्कर्ष और सुझाव

### 8.1 शोध से प्राप्त मुख्य निष्कर्ष

इस शोध के दौरान झांसी मण्डल की सांस्कृतिक धरोहर का गहन अध्ययन किया गया और यह स्पष्ट हुआ कि यहाँ के लोकगीतों और साहित्य ने स्वतंत्रता आंदोलन में अद्वितीय भूमिका निभाई। मुख्य निष्कर्ष निम्नलिखित हैं:

1. झांसी मण्डल स्वतंत्रता संग्राम का केवल ऐतिहासिक केंद्र नहीं था, बल्कि यह सांस्कृतिक दृष्टि से भी स्वतंत्रता चेतना का प्रवाहक रहा।
2. लोकगीतों ने ग्रामीण समाज में स्वतंत्रता चेतना जगाने का कार्य किया। स्त्रियों, किसानों और मजदूरों द्वारा गाए गए गीतों ने अंग्रेजों के अन्याय और शोषण के विरुद्ध प्रतिरोध की भावना उत्पन्न की।
3. साहित्य में रानी लक्ष्मीबाई और अन्य शहीदों की गाथाएँ वीर रस से परिपूर्ण रचनाओं के माध्यम से प्रस्तुत की गईं। इससे शिक्षित वर्ग में स्वतंत्रता संग्राम के प्रति गहरी प्रतिबद्धता पैदा हुई।
4. नाटक, नौटंकी और लोकनाट्य ने व्यापक जनसमूह तक स्वतंत्रता का संदेश पहुँचाया। इस प्रकार लोक और साहित्य दोनों ने मिलकर आंदोलन को जनआंदोलन में बदल दिया।
5. झांसी मण्डल की मौखिक परंपरा ने स्वतंत्रता संग्राम की स्मृतियों को पीढ़ी-दर-पीढ़ी सुरक्षित रखा।

### 8.2 झांसी मण्डल के सांस्कृतिक योगदान का मूल्यांकन

झांसी मण्डल का सांस्कृतिक योगदान भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में अत्यंत महत्त्वपूर्ण रहा। यदि हम केवल राजनीतिक और सैन्य दृष्टि से देखें, तो 1857 की क्रांति और रानी लक्ष्मीबाई का नाम अग्रणी रूप से आता है। किंतु जब इसे सांस्कृतिक दृष्टि से परखा जाता है, तो स्पष्ट होता है कि लोकगीतों और साहित्य ने जनता को मानसिक और भावनात्मक रूप से संघर्ष के लिए तैयार किया।

लोकगीतों ने ग्रामीण समाज को जोड़ा और उसे स्वतंत्रता की आकांक्षा से प्रेरित किया। महिलाओं ने गीतों के माध्यम से अपने पुत्रों और पतियों को बलिदान के लिए तैयार किया। किसानों ने गीतों में शोषण के खिलाफ प्रतिरोध दर्ज किया। इस प्रकार लोकगीतों ने जनमानस में स्वतंत्रता को जीवन का अनिवार्य लक्ष्य बना दिया।

दूसरी ओर, साहित्य ने शिक्षित वर्ग को संगठित किया। कविताओं, नाटकों और नौटंकी ने स्वतंत्रता संग्राम को वैचारिक और ऐतिहासिक आधार प्रदान किया। साहित्य ने यह स्थापित किया कि स्वतंत्रता केवल राजनीतिक स्वतंत्रता नहीं, बल्कि सांस्कृतिक पुनर्जागरण भी है।

इस प्रकार झांसी मण्डल का सांस्कृतिक योगदान भारतीय स्वतंत्रता संग्राम की रीढ़ कहा जा सकता है। इसने आंदोलन को भावनात्मक गहराई और सामाजिक व्यापकता प्रदान की।

### 8.3 सुझाव

आज के परिप्रेक्ष्य में झांसी मण्डल की यह सांस्कृतिक धरोहर लुप्त होती जा रही है। लोकगीतों और लोक-नाट्य की परंपरा आधुनिक मनोरंजन के दबाव में पीछे छूट रही है। ऐसे में इनके संरक्षण और प्रसार के लिए ठोस प्रयासों की आवश्यकता है।

1. **लोकगीतों का संकलन और प्रकाशन:** क्षेत्रीय लोकगीतों को व्यवस्थित रूप से संकलित कर

पुस्तक रूप में प्रकाशित किया जाए, ताकि वे आने वाली पीढ़ियों के लिए उपलब्ध रहें।

2. **डिजिटल आर्काइव बनाना:** आधुनिक तकनीक का उपयोग कर झांसी मण्डल के लोकगीतों, लोकनाट्य और साहित्यिक कृतियों को डिजिटल रूप में संग्रहित किया जाए।

3. **शैक्षणिक पाठ्यक्रम में समावेश:** विश्वविद्यालयों और कॉलेजों के इतिहास तथा साहित्य पाठ्यक्रमों में झांसी मण्डल के सांस्कृतिक योगदान को शामिल किया जाए।

4. **सांस्कृतिक महोत्सवों का आयोजन:** झांसी मण्डल में नियमित रूप से लोकगीत और लोकनाट्य महोत्सव आयोजित किए जाएँ, ताकि स्थानीय कलाकारों को प्रोत्साहन मिले और परंपरा जीवित रहे।

5. **अनुसंधान को बढ़ावा:** शोध संस्थानों और विश्वविद्यालयों को प्रोत्साहित किया जाए कि वे झांसी मण्डल की सांस्कृतिक धरोहर पर और गहन अध्ययन करें।

6. **महिलाओं की भूमिका पर विशेष ध्यान:** चूँकि लोकगीतों की परंपरा में महिलाओं की भूमिका केंद्रीय रही है, अतः उनके अनुभवों और गीतों को विशेष रूप से संरक्षित किया जाए।

इन सुझावों का उद्देश्य यह है कि झांसी मण्डल की सांस्कृतिक धरोहर केवल अतीत का हिस्सा न रहकर वर्तमान और भविष्य की पीढ़ियों के लिए भी प्रेरणा का स्रोत बने।

## संदर्भ सूची


1. नेहरू, ज. (**1946**). *भारत की खोज*. नई दिल्ली: ओरिएण्ट लांगमैन.
2. शर्मा, र. (**1969**). *हिंदी साहित्य और स्वतंत्रता संग्राम*. दिल्ली: लोकभारती प्रकाशन.
3. नागर, अ. (**1960**). *गदर के फूल*. इलाहाबाद: लोकभारती.
4. चौहान, स. (**1930**). *झांसी की रानी* (कविता संग्रह). प्रयागराज: भारतीय प्रकाशन.
5. मिश्र, प. (**2005**). *लोकगीत और स्वतंत्रता चेतना*. लखनऊ: हिंदी साहित्य परिषद.
6. वर्मा, ह. (**1999**). *झांसी की लोकपरंपराएँ*. झांसी: बुंदेलखंड विश्वविद्यालय प्रकाशन.
7. चंद्रा, बि. (**1989**). *भारत का स्वतंत्रता संग्राम (1857–1947)*. नयी दिल्ली: पेंगुइन वाइकिंग.
8. चंद्रा, स. (**2011**). *स्वतंत्रता और उसकी चुनौतियाँ*. दिल्ली: ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस.
9. मुखर्जी, र. (**1952**). *भारतीय संस्कृति और स्वतंत्रता आंदोलन*. कोलकाता: एशियाटिक सोसाइटी.
10. दीक्षित, स. क. (**1987**). *भारतीय लोकसाहित्य और स्वतंत्रता आंदोलन*. वाराणसी: भारतीय विद्या संस्थान.
11. चौहान, स. (**1930**). *झांसी की रानी* (कविता). प्रयागराज: भारतीय प्रकाशन.
12. नागर, अ. (**1960**). *गदर के फूल*. इलाहाबाद: लोकभारती.
13. लोकगीत और मौखिक परंपरा (संकलन). (**1857–1947**). अप्रकाशित साक्षात्कार एवं गीत संग्रह, झांसी मण्डल.
14. नेहरू, ज. (**1946**). *भारत की खोज*. नई दिल्ली: ओरिएण्ट लांगमैन.
15. शर्मा, र. (**1969**). *हिंदी साहित्य और स्वतंत्रता संग्राम*. दिल्ली: लोकभारती प्रकाशन.
16. मिश्र, प. (**2005**). *लोकगीत और स्वतंत्रता चेतना*. लखनऊ: हिंदी साहित्य परिषद.
17. वर्मा, ह. (**1999**). *झांसी की लोकपरंपराएँ*. झांसी: बुंदेलखंड विश्वविद्यालय प्रकाशन.
18. चंद्रा, बि. (**1989**). *भारत का स्वतंत्रता संग्राम (1857–1947)*. नई दिल्ली: पेंगुइन वाइकिंग.
19. चंद्रा, स. (**2011**). *स्वतंत्रता और उसकी चुनौतियाँ*. दिल्ली: ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस.
20. मुखर्जी, र. (**1952**). *भारतीय संस्कृति और स्वतंत्रता आंदोलन*. कोलकाता: एशियाटिक सोसाइटी.
21. दीक्षित, स. क. (**1987**). *भारतीय लोकसाहित्य और स्वतंत्रता आंदोलन*. वाराणसी: भारतीय विद्या संस्थान.
22. उपाध्याय, र. (**1974**). *उत्तर भारत के लोकगीत और स्वतंत्रता चेतना*. वाराणसी: भारतीय विद्या भवन.
23. द्विवेदी, ह. प. (**1981**). *हिंदी लोकसाहित्य: स्वरूप और विकास*. प्रयागराज: हिंदी साहित्य सम्मेलन.
24. दास, श. स. (**1970**). *हिंदी साहित्य का इतिहास और स्वतंत्रता चेतना*. वाराणसी: नागरी प्रचारिणी सभा.
25. मिश्र, वी. (**2003**). ***1857*** *की क्रांति और बुंदेलखंड*. झांसी: बुंदेलखंड शोध प्रकाशन.
26. जोशी, प. (**2003**). *रानी लक्ष्मीबाई और झांसी का संघर्ष*. दिल्ली: नेशनल बुक ट्रस्ट.


**Disclaimer/Publisher's Note**: The views, findings, conclusions, and opinions expressed in articles published in this journal are exclusively those of the individual author(s) and contributor(s). The publisher and/or editorial team neither endorse nor necessarily share these viewpoints. The publisher and/or editors assume no responsibility or liability for any damage, harm, loss, or injury, whether personal or otherwise, that might occur from the use, interpretation, or reliance upon the information, methods, instructions, or products discussed in the journal's content.

**********